Government Post Graduate College, New Tehri (Uttarakhand)
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नई टिहरी, उत्तराखण्ड
Phone Number: 01376234964; Fax: 01376 234964; Mobile: 9412077006
E-mail (office): gpgcollegentt@gmail.com ; Email (NAAC): gpgnttnaac@gmail.com

3.2.1: ADDITIONAL INFORMATIONS

CONTENT-

1. RESEARCH AND INNOVATION COMMITTEE
2. SPEACIAL ISSUE ON TRADITIONAL KNOWLEGDE SYSTEM PUBLISHED BY HSSC.
3. REPORT ON EVENT ORGANISED BY THE INSTITUTION ON TRADITIONAL KNOWLEDGE SYSTEM.
4. IPR CELL ESTABLISHMENT AND EVENTS ORGANISED BY THE CELL
5. YOUTUBE LINK OF THE TKS EVENT(s):

https://www.youtube.com/watch?v=FI_BpF1FSvM

https://www.youtube.com/watch?v=xXqq9Z8Aqwk

Government Post Graduate College, New Tehri (Uttarakhand)
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नई टिहरी, उत्तराखण्ड
Phone Number: 01376234964; Fax: 01376 234964; Mobile: 9412077006
E-mail (office): gpgcollegentt@gmail.com ; Email (NAAC): gpgnttnaac@gmail.com

RESEARCH AND INNOVATION ECOSYSTEM

Establishment of Research and Innovation Council

under

Chief Minister Innovation Scheme

***Attached*: Minutes of Meeting**

प्रस्ताव संख्या 1- आज दिनांक 15/01/2022 को प्राचार्य महोदय रा० स्नात० महाविद्यालय नई टिहरी टिहरी गढ़वाल की अध्यक्षता में एक बैठक सम्पन्न हुयी जिसमें क्रमशः निम्न बिन्दुओं पर चर्चा की गयी

क्र० सं० 1- मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अन्तर्गत महाविद्यालय स्तर पर एक समिति का गठन किया गया। जिसमें समिति में निम्न सदस्यों को नामित प्रस्तावित किये गये:

(क) प्राचार्य रा० स्नात० महाविद्यालय — संरक्षक
नई टिहरी, टि० ग०
उत्तराखण्ड

(ख) डा० कविता काला — नोडल अधिकारी
विभागाध्यक्ष जन्तु विज्ञान
रा० स्नात० महा० नई टिहरी
टिहरी गढ़वाल

(ग) डा० कुलदीप सिंह रावत — सदस्य/संयोजक
विभागाध्यक्ष भौतिक विज्ञान
रा० स्नात० महाविद्यालय नई टिहरी

(घ) डा० पदमा वशिष्ठ — सदस्य
जन्तु विज्ञान विभाग रा० स्नात० म० नई टिहरी
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

(च) डा० विजय प्रकाश सेमवाल — सदस्य
जन्तु विज्ञान विभाग रा० स्नात० म० नई टिहरी
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

(छ) डा० साक्षी शुक्ला
रसायन विज्ञान विभाग रा० स्नात० म० नई टिहरी
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

(ज) डा० पुष्पा पँवार
साहित्य की विभाग रा० स्नात० म० नई टिहरी
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

Scanned by PDF Scanner

1. डॉ. सुमन सिंह गुसाईं /
मानव विज्ञान विभाग
(रा० स्नातको० म० नई टिहरी टि०ग०)

2. शंकर सिंह -
कार्यालय रा० स्नातको० म० नई टिहरी
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

क्र. स. - 2. मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अन्तर्गत महाविद्यालय में स्थापित केन्द्र का नाम "Data Base Center for Himalayan Fishes, New Tehri" प्रस्तावित किया गया।

क्र. स. - 3 वृहद स्थापित सरकारी (fishery department Uttarakhand) से समन्वय स्थापित कर विषय सम्बन्धी ज्ञापन (लेख का प्रारूप/रूपरेखा) तैयार करना।

क्र. स. 4 - विषय सम्बन्धी ज्ञापन तैयार होने पर हस्ताक्षरित किया जाना प्रस्तावित।

क्र. स. 5 - उक्त का प्रचार-प्रसार, समिति के सदस्यों द्वारा प्रिंट एवं डिजिटल/इलेक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से तथा महाविद्यालय की वेबसाइट में सुस्पष्ट रूप से प्रकाशित किया जाए।

क्र. स. - 6 योजना हेतु छात्र-छात्राओं के कार्य-समूह (Action group) का गठन प्रस्तावित।

realme Shot on realme 8i
2022.12.14 16:37
Scanned by PDF Scanner

क्र० सं० 7- उक्त स्थापित केन्द्र के माध्यम से हिमालय में की प्रमुख नदियों में मिलने वाली मत्स्य-प्रजाति की पहचान बनाना तथा शोध कार्यों हेतु सहायता प्रदान करना तथा नये रोजगार स्थापित करना ।

क्र० सं० 8 समय 3 पर आपस में सम्पर्क स्थापित कर प्रगति आख्या प्रस्तुत करेंगे

15/01/22
नोडल अधिकारी

15/01/2022
प्राचार्य
संरक्षक

realme Shot on realme 8i
2022.12.14 16:37

Scanned by PDF Scanner

संचेतना

विवेक युक्त आस्था, आस्था सहित विवेक

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद

HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE COUNCIL

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल

मासिक ई न्यूजलैटर

अंक VII ,जून 2022

संपादकीय

प्रिय पाठकों ! संचेतना का सातवां अंक आपके हाथों में है। पिछले अंक से हमने संचेतना को शहर के गणमान्य व्यक्तियों और बुद्धिजीवियों तक पहुंचाने का निर्णय लिया और उन तक संचेतना का अंक पहुंचाया भी। उन सब ने छात्र-छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा को मंच देने के लिए इस लघु प्रयास की सराहना की। यह हमारे लिए संतोष की बात है। इसी क्रम में इस अंक में महाविद्यालय की छात्रा मनिका ने प्रख्यात पर्यावरणविद श्री विजय जड़धारी जी का साक्षात्कार लिया है। छात्र-छात्राएं विभिन्न विषयों में शोध प्रविधि के बारे में पढ़ते हैं लेकिन संचेतना में वे साक्षात्कार कैसे लिया जाता है उसकी तकनीक क्या है आदि के बारे में व्यवहारिक धरातल पर सीखते हैं। उत्तराखंड में पलायन एक बड़ी समस्या के रूप में चिन्हित किया गया है। इस समस्या पर युवा क्या सोचते हैं इसको सौरव पंवार ने अपने आलेख में रेखांकित किया है। 5 जून पर्यावरण दिवस के अवसर पर देश भर में पर्यावरण जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित किए गए। हमारी परंपरा और दर्शन में मनुष्य इस विशाल ब्रह्मांड का एक हिस्सा भर है जबकि पाश्चात्य आधुनिक विज्ञान और दर्शन में मनुष्य इस प्रकृति का मालिक है। इसी पर एम. ए. संस्कृत की छात्रा शिवानी ने 'वेदों में पर्यावरण' विषय पर लेख लिखा है। **अवार भाषा के प्रसिद्ध रूसी कवि रसूल हमजातोव ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'मेरा दगिस्तान' में लिखा है - "पहाड़ी आदमी को दो चीजों की रक्षा करनी चाहिए- अपनी टोपी और अपने नाम की। टोपी की रक्षा वही कर सकेगा जिसके पास टोपी के नीचे सिर है। नाम की रक्षा वही कर सकेगा जिसके दिल में आग है।"** संचेतना टोपी के नीचे सिर और दिल में आग को बचाए रखने का एक छोटा प्रयास है। उम्मीद है कि इस प्रयास को आप सभी का प्यार और सहयोग मिलेगा।

आपका ही संजीब नेगी।

Seventh Monthly Lecture by Dr Ankita Bora on Topic- **हाशिए में पड़ा समाज : थर्ड जेंडर।**

कला और मानविकी परिषद की गह अप्रैल की गतिविधियां

डॉ अंकिता बोरा, असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी द्वारा "हाशिए में पड़ा समाज : थर्ड जेंडर, चित्रा मुद्गल के उपन्यास के विशेष संदर्भ में" विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि थर्ड जेंडर समाज से कटे हुए लोग हैं जो अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। डॉ बोरा ने बताया कि कैसे विपरीत परिस्थितियों में रहते हुए कुछ किन्नरों ने अपने व अपने समाज के लिए उत्कृष्ट कार्य किए। पद्म श्री पुरस्कार प्राप्त मंजम्मा जोगती, प्रथम किन्नर आइ ए एस ऐश्वर्या ऋतुपर्णा प्रधान समाज के लिए मिसाल हैं कि कैसे अभावों में भी अवसर खोजे जा सकते हैं। किन्नरों को प्राप्त संवैधानिक अधिकारों के विषय में बताते हुए उन्होंने कहा कि थर्ड जेंडर को मान्यता संविधान ने तो दे दी, किन्तु उन्हें अभी तक परिवार और समाज की स्वीकार्यता नहीं मिल पाई है। किन्नर समस्या को उजागर करता हुआ उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स न० 203 : नालासोपारा' के माध्यम से किन्नरों की सरदार और गुरु परंपरा की व्यवस्था को भी बताया।

महाविद्यालय की बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा मनिका ने प्रख्यात पर्यावरणविद और बीज बचाओ आंदोलन के प्रणेता श्री विजय जड़धारी जी से 5 जून पर्यावरण दिवस पर एक साक्षात्कार लिया। जो संचेतना के इस अंक में पाठकों के लिए प्रस्तुत है। श्री जड़धारी जी को इंदिरा गांधी पर्यावरण पुरस्कार 2009,गांधी शांति प्रतिष्ठान द्वारा 2007 में प्रणवानंद पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है.वर्तमान में वे उत्तराखंड जैव विविधता बोर्ड में विषय विशेषज्ञ के रूप में हैं साथ ही औद्यानिकी और वानिकी विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद और रिसर्च काउंसिल के भी सदस्य हैं साथ ही भारतीय वन अनुसंधान देहरादून की रिसर्च एडवाइजरी ग्रुप के भी सदस्य के रूप में उनके कार्यों को पहचान मिली है। अपने कार्यों को लेकर उन्होंने बांग्लादेश,नेपाल, मलेशिया, बेल्जियम,जर्मनी, दक्षिण अफ्रीका आदि कई देशों में व्याख्यान दिए हैं। उनकी पहाड़ से सम्बन्धित खेती और पारंपरिक बीज और खेती पर लगभग 8 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं और सैकड़ों शोध पत्र विभिन्न विश्वविद्यालयों, संस्थानों और किसानों के बीच प्रस्तुत किए गए हैं।

मनिका - जड़धारी जी आप का कार्यक्रम में स्वागत है,आप हमें और हमारे पाठकों के लिए बताएं कि बीज बचाओ आंदोलन क्या है और आप चिपको आंदोलन से भी जुड़े रहे तो इस पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालें।

श्री विजय जड़धारी - मैं अपनी युवावस्था में चिपको आंदोलन का कार्यकर्ता रहा हूं चिपको आंदोलन के बारे में लोग जानते हैं लेकिन जो जानते हैं वह रैणी या चमोली का चैप्टर ही जानते हैं. कम लोग जानते हैं कि टिहरी में भी चिपको आंदोलन चला और हेंवल नदी जो सुरकंडा से निकली है और शिवपुरी में गंगा में विलीन हो जाती है उसके क्षेत्र में अदवाणी, खुरेत, लासी यहां 1971 से 80 तक यह आंदोलन चला और जिससे चिपको आंदोलन को एक नई दिशा मिली। पहले जंगल की देन लीसा, लकड़ी का व्यापार और एक तरह से रोजगार था इसलिए जंगल काटे जाते थे। शुरुआत में चिपको आंदोलन व्यापार केंद्रित था कि क्यों ना हम भी जंगल काटें और इसी का उद्योग लगाएं ,उसी दौरान बहुत सारी समितियां एवं वन निगम की बना। वन निगम बना तो श्रमिक वर्गों के साथ इन्होंने भी जंगल का दोहन किया और जिसके साथ श्रमिक समूह को रोजगार देने की बात कही जाती थी। लेकिन जब पिथौरागढ़ के तवाघाट में लैंडस्लाइड आया जिसमें लगभग 40-50 लोग आईटीबीपी के जवानों संग मारे गए. तब अध्ययन के उपरांत सामने आया कि उस क्षेत्र में जब जंगल काटा गया तो पेड़ कम होने के कारण बरसात में भूस्खलन हुआ.तब हेंवल घाटी से चिपको आंदोलन को एक नई दिशा मिली कि अब लोगों को कुदरती संसाधन जैसे जंगलों को बचाना चाहिए और यहां से पर्यावरण चेतना का एक नया मंत्र निकला- 'क्या है जंगल के उपकार, मिट्टी पानी और बयार. मिट्टी पानी और बयार, जिंदा रहने के आधार।' इस नारे से लीसा लकड़ी और व्यापार पीछे छूट गया और जो जंगल की देन है मिट्टी, पानी और हवा यानी पर्यावरण इस पर महत्व दिया जाने लगा।

मनिका - बीज बचाओ आंदोलन में आपकी क्या प्रेरणा थी और सबसे बड़ी समस्या रही होगी अशिक्षित लोगों को हाइब्रिड बीजों के बजाय पारंपरिक खेती और बीजों के प्रति जागरूक करना।

श्री विजय जड़धारी - असल में समस्या अनपढ़ लोगों और किसानों की तरफ से कम आई सबसे बड़ी समस्या कृषि वैज्ञानिक, कृषि विभाग रानी चौरी में जी बी पंत विश्वविद्यालय आदि से आई। इन लोगों ने शुरुआत में जो हाइब्रिड बीज थे उनके साथ रासायनिक खाद भी फ्री देते थे। बीज भी देते थे, खाद भी देते थे और फसल में कुछ खराबी आ जाए तो कीटनाशक भी देते थे। शुरुआत में उपज दोगुना तक होने लगी लेकिन कीटनाशक, खरपतवारनाशक इनके प्रयोग से खेतों की मिट्टी नशे की आदी हो गई और मिट्टी खराब होने लगी। आदमी के लिए शराब और मिट्टी के लिए रासायनिक खाद एक तरह का नशा है। बुजुर्गों से बात करके पता चला कि पहले बीजों की बहुत सारी किस्में आसानी से उपलब्ध होती थी जब हमने बुजुर्गों से बातचीत की तो उन्होंने कहा कि जब से नए बीज आए तब से हमने पुराने बीज बोने छोड़ दिए. फिर हमने पुराने बीजों को खोजने के लिए दूर-दूर के स्थानों की यात्रा की। 80 के दशक में जब हमारे पारंपरिक बीज समाप्त हो गए थे तब भी दूरदराज के क्षेत्रों में लोगों ने अपने पारंपरिक बीज बचा कर रखे थे। हमने पूरे पहाड़ की यात्रा में लोगों से थोड़ा-थोड़ा करके एक एक मुट्ठी पारंपरिक बीज इकट्ठा कीजिए और फिर किसानों को बोने के लिए दिए।

मणिका - जो हमारे परंपरागत बीज हैं ,यह खाद्य सुरक्षा और पोषण से किस तरह जुड़े हैं इस पर थोड़ा प्रकाश डालिए।

श्री विजय जड़धारी - परंपरागत बीच खाद्य सुरक्षा और पोषण की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं. ये ऐसे होते हैं जो एकल, मोनोकल्चर नहीं है यानी इनके साथ और चीजें भी उगाई जाती हैं। जैसे कोदा के साथ हम 12 तरह की चीजें उगा सकते हैं जिसे पहाड़ में बारहनाजा कहते हैं। बारहनाजा हमारी खाद्य सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। इसमें हर प्रकार का खाना मिल जाता है जैसे पोषण की दृष्टि से मंडवा खाने से हड्डियां मजबूत होंगी,राजमा , भट्ट,गहथ, नौरंगी, सुन्टा, रगड़वांस आदि में भरपूर मात्रा में अलग-अलग पोषक तत्व होते हैं। दालों से मांस के बराबर प्रोटीन मिल जाता है तो चौलाई से कैल्शियम और प्रोटीन की पूर्ति होती है। पहाड़ में खेती और पशुपालन एक दूसरे से जुड़े हैं.पशुपालन से गोबर प्राप्त होता है जिससे धरती भी पोषित होती है। चौलाई आदि के साथ लैग्युम वाली दालें जैसे उड़द, नौरंगी भी इसके साथ लिपट जाती हैं परिणामस्वरुप यह nitrogen-fixing का काम करती हैं.इस प्रकार खाद्य सुरक्षा और पोषण भरपूर मात्रा में मिलता है.80 के दशक में जब वैज्ञानिकों ने कहा कि मंडवा, बाजरा आदि मोटे अनाजों को छोड़कर सिर्फ सोयाबीन लगाओ और जब लोगों में फ्री में बीज, खाद आदि बांटे तो लोगों ने पहले सोयाबीन लगाया । पहले साल उत्पादकता भी बढी और लोगों को उसका भाव भी मिला लेकिन अगले साल जब बहुत सारे लोगों ने सोयाबीन लगाया तो उसे बेचने की भी दिक्कत आई और अगले साल बिना कीटनाशक और खादें डालें उसका उत्पादन भी घट गया। सोयाबीन में चारा भूसा तो होता नहीं है जो पशुओं के काम आता और ना ही उसे पूरे साल भर खाया जा सकता था तो पहाड़ की महिलाओं ने हमारी आंखें खोली, उन्होंने बताया कि जो हमारा मंडवा झंगोरा होता था उसका दाना हम खा लेते थे और उसका शेष हमारे जानवर खा लेते थे. तो अगर हम सोयाबीन की खेती करते हैं तो सबसे पहले तो उसमें खरीदारों की कमी होती है और अगर बिक भी जाए तो हमारे पशुओं के लिए चारा नहीं बचता। एक पहाड़ी कहावत है कि - 'अपणा आलू बाजार बेचा अर बिराणा आलू न थोबड़ा थेचा'.यानी पहले अपने आलू बाजार में बेच दो और फिर सड़ा गला बाजार से खरीद कर अपना मुंह खराब करो। इससे हमारी आंखें खुली कि अगर खेती करनी है तो उसमें विविधता होनी चाहिए और पहाड़ की खेती में विविधता भी है और खाद्य सुरक्षा भी।

मणिका -1980 के दशक में जब आपने यह कार्य प्रारंभ किया तो लोगों द्वारा आपका मजाक और विरोध भी किया गया होगा तब आप कैसे अपने दृढ़ निश्चय से अपने कार्य के प्रति अग्रसर रहे।

श्री विजय जड़धारी - हमारा पक्का विश्वास था कि खेती के पारंपरिक बीज, अच्छी मिट्टी, बुजुर्गों का अनुभव और महिलाएं हमारे ज्ञान का भंडार हैं, यह बीज का संचय करती है और उसका उपयोग भी। पहाड़ के लोग बीज रखने में बहुत माहिर माने जाते हैं एटकिंसन के गजट में भी लिखा है कि पहाड़ का आदमी मर जाएगा लेकिन अपना बीज नहीं खाएगा। 1852 के अकाल और गोरखा आक्रमण के समय भी यह देखा गया कि लोग जहां तहां मरे हुए पाए गए लेकिन उन्होंने अपनी तोमणियों में रखे हुए बीजों को खाने के लिए प्रयोग नहीं किया। तो पहाड़ के लोग बीजों के प्रति बड़े संवेदनशील रहे हैं।

मनिका - 1980 के दशक में आपने यह अभियान शुरू किया और अब यह विचार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी स्वीकृति पा रहा है। जैसे कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2023 को इंटरनेशनल मिलेट ईयर के रूप में मनाने का प्रस्ताव रखा है और आज प्रधानमंत्री मोदी भी देश से मिट्टी बचाओ की अपील कर रहे हैं ऐसे में आपको कैसा महसूस होता है।

श्री विजय जड़धारी - अच्छा भी लगता है और आश्चर्य भी होता है जब 30 साल पहले हम यह बात कहते थे तब लोग हमारा मजाक उड़ाते थे और बाहरी समाज यानि शहरी सभ्यता में भी लोग अगर मंडवा झंगोरा आदि खाते तो छुपा कर खाते थे। पहले सरकार भी पारंपरिक अनाज का तिरस्कार कर उसे बेकार कहती थी। इन अनाजों को मोटा अनाज और गंवार लोगों का खाना कहकर तिरस्कृत किया जाता था लेकिन अब वही वैज्ञानिक कह रहे हैं कि यही अनाज उत्तम और पौष्टिक आहार हैं। भारत सरकार ने 10 मई 2018 को गजट नोटिफिकेशन निकाला जिसमें उन्होंने माना कि यह झंगोरा, मंडवा, बाजरा आदि पौष्टिक आहार है अंग्रेजी में न्यूट्रीसेरियल इन्हें कहा जा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने गुजरात में प्राकृतिक खेती को लेकर अभी एक बड़ा कार्यक्रम किया। नीति आयोग भी प्राकृतिक खेती को आगे बढ़ाने पर जोर दे रहा है। सरकार को राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर एक नीति बनाने की आवश्यकता है कि किस प्रकार इन अनाजों को बचा सके और इस तरह की खेती करने वाले लोगों को सम्मान दें,आज जो क्लाइमेट चेंज हो रहा है उसमें सूखे में अतिवृष्टि में और कुछ हद तक ओले में भी जो फसलें टिकी रह सकती हैं वह पारंपरिक फसल और बीज ही हैं। यह वह फसलें हैं जिनके लिए बहुत कम पानी की जरूरत है। इस तरह जो सतत विकास का मॉडल है उसमें भी पारंपरिक बीजों और फसलों का अपना महत्व है। अभी जापान में एक किसान मासुनोआ फोकोबे ने प्राकृतिक खेती की अवधारणा दी है। जैसे जंगल को ना हम पानी देते हैं न खाद देते हैं बल्कि प्रकृति अपना पोषण और संरक्षण स्वयं करती है। पारंपरिक बीजों की ताकत भी यही प्राकृतिक शक्ति है और पुराने लोगों को कोई बीमारी नहीं होती थी क्योंकि उनका भोजन शक्तिशाली था तो खाद्य सुरक्षा और पोषण की दृष्टि से और जलवायु परिवर्तन में यही पारंपरिक बीज और फसलें आगे काम आने वाली है।

मनिका - आज युवाओं को आप क्या संदेश देंगे कि वह अपने परंपरागत खेती और बीजों से जुड़े रहें।

श्री विजय जड़धारी - सबसे पहले अपने बुजुर्गों से बात करके जानें कि पहले का खानपान कैसा था। आज हर युवा खेती नहीं कर सकता लेकिन हर किसी के घर में गमले हैं, किचन गार्डन है तो उसी में थोड़ा बहुत कुछ उगा कर देखें। आप किसान नहीं हो सकते लेकिन आप लोगों को जागरूक कर सकते हैं कि किस प्रकार रसायन और हाइब्रिड बीज जमीन को, खेती को आपके स्वास्थ्य को और आपके पशु पक्षियों को भी नुकसान पहुंचा रहे हैं और ज्यादा से ज्यादा प्रकृति के करीब रहकर प्राकृतिक चीजों का उपयोग करें।

मनिका- जड़धारी जी आपने बीज बचाओ आंदोलन के बारे में हमारे युवा साथियों को जानकारी दी आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

पलायन एक अभिशाप

सौरभ पँवार, बी ए प्रथम वर्ष

कहा जाता है कि "पहाड़ का पानी और पहाड़ की जवानी कभी पहाड़ के काम नहीं आती।" पलायन आयोग की रिपोर्ट ने यह बात साबित भी कर दी है। पलायन आयोग की रिपोर्ट में कहा गया है कि अलग राज्य बनने के बाद उत्तराखंड से करीब 60% आबादी यानी 32 लाख लोग अपना घर छोड़ चुके हैं। पलायन आयोग की रिपोर्ट कहती है कि 2018 में उत्तराखंड के 1700 गाँव भुतहा (घोस्ट विलेज) हो चुके हैं। जबकि करीब 1000 गांव ऐसे हैं जहां 100 से कम लोग बचे हैं। कुल मिलाकर 3900 गांवों से पलायन हुआ है और पलायन ग्रामीण के लिए एक अभिशाप बन चुका है।

पौड़ी व अल्मोड़ा जनपद से सबसे अधिक पलायन हुआ है। पौड़ी में 2001 की जनगणना के अनुसार लगभग 27205 घरों पर ताले लटके हुए थे। वहीं 2011 में ये 38764 हो चुके हैं तथा उत्तराखंड के 13 जिलों में से सबसे अधिक पलायन पौड़ी से हुआ है।

उत्तराखंड से पलायन कर रहे ग्रामीण युवकों का कहना है कि **खुद से अपना घर कोई नहीं छोड़ता। रोजगार के अवसरों की कमी के चलते युवा शहरी क्षेत्रों में बेहतर सुविधाओं के लिए पलायन कर रहे हैं।**

आज के समय में पलायन करना एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है। इसके बहुत से नुकसान भी हैं और कुछ फायदे भी हैं। यदि ग्रामीण क्षेत्रों के लोग पलायन करते हैं तो जाहिर सी बात है अधिकतर लोग शहरों में शिक्षा या नौकरी करने के बारे में ही सोचते हैं तथा एक बार शहरों में जाने के बाद युवा दोबारा घर वापस आने के बारे में नहीं सोचता है। जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों की जनसंख्या दिन प्रतिदिन कम होती आ रही है।

उत्तराखंड में पलायन करने के कुछ मुख्य कारण निम्न प्रकार से हैं -

शिक्षा - आज उत्तराखंड में प्राथमिक एवं माध्यमिक और डिग्री कॉलेज की संख्या करीब 19152 होने के बावजूद शिक्षा संस्थानों पर बुनियादी सुविधाओं की कमी है, जिस कारण पहाड़ युवा मैदानी क्षेत्रों जैसे - देहरादून, दिल्ली की ओर पलायन कर रहा है, क्योंकि वहां शिक्षा की सुविधा अच्छी है। यदि हम उत्तराखंड में शिक्षा के क्षेत्र को ही लें जहां सरकार की नीति के अनुसार हर 1 किलोमीटर की दूरी पर प्राथमिक विद्यालय और हर 3 किलोमीटर की दूरी पर एक माध्यमिक विद्यालय बनाए गए हैं, परंतु इन स्कूलों में पढ़ने के लिए बच्चे ही नहीं हैं। कहीं बच्चे हैं भी तो उनकी संख्या बहुत कम है। स्कूल में पढ़ा रहे अध्यापकों ने भी अपने परिवारों को देहरादून जैसे मैदानी इलाकों में रखा है जिससे वे 21वीं सदी के बदलते जीवन व सुविधाओं का लाभ ले सकें।

ऐसा भी नहीं है कि सभी स्कूल के हालात एक जैसे हैं, बल्कि उत्तराखंड के बहुत से पहाड़ी स्कूल ऐसे भी हैं जहां सैकड़ों की संख्या में छात्र हैं तथा यह विद्यालय अध्यापकों की कमी से जूझ रहे हैं। सरकार को इन विद्यालयों में ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे वह पलायन को रोकने में सक्षम हो सके।

स्वास्थ्य सुविधा - उत्तराखंड के सरकारी अस्पताल के हालात बहुत अच्छे नहीं है। लोगों को अस्पताल तक पहुंचाने के लिए कई किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। उत्तराखंड में कई गांव ऐसे भी हैं जहां 108 एंबुलेंस सेवा को पहुंचने में 4 से 5 घंटे तक लग जाते हैं जिस कारण लोगों को अस्पताल तक पहुंचने में बहुत तकलीफ होती है। उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्रों के अस्पतालों में डॉक्टरों एवं मशीनों की भी कमी है जिस कारण उत्तराखंड का युवा शहरों में पलायन करता है।

रोजगार - पलायन आयोग रिपोर्ट के अनुसार 50% लोग रोजगार के लिए पलायन करते हैं। उत्तराखंड में रोजगार के अधिक संसाधन उपलब्ध नहीं है। रोजगार के लिए यहां के अधिकतर लोग खेती पर निर्भर करते हैं लेकिन जंगली जीव जंतु उनकी खेती को नष्ट कर देते हैं। उत्तराखंड में लोग छोटे-छोटे व्यापार करते हैं जिससे उन्हें अधिक लाभ नहीं मिलता तथा उत्तराखंड की सरकार को रोजगार पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

पलायन के सकारात्मक पहलुओं को देखें तो पलायन करने से लोगों को अच्छी स्वास्थ्य सुविधा, अच्छी शिक्षा, रोजगार के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। उत्तराखंड की जीडीपी बहुत अच्छी है जिसका कारण हमारे लोग उत्तराखंड से पलायन कर दूसरे राज्य व देश - विदेश में जाते हैं और अपने परिवार के भरण पोषण के लिए पैसे भेजते हैं और स्वयं भी आते जाते रहते हैं जिससे हमारी जीडीपी को बढ़ावा मिलता है।

सरकार भी इस गंभीर समस्या को कम करने का प्रयास कर रही है और इस मुद्दे पर अध्ययन के लिए सरकार ने अगस्त 2017 में **ग्राम**

विकास एवं पलायन आयोग की स्थापना की। जिसका मुख्यालय पौड़ी में बनाया गया था। लेकिन सोचने वाली बात यह है कि पलायन आयोग ने कुछ सालों में खुद ही पलायन कर दिया और अपना मुख्यालय पौड़ी से देहरादून में शिफ्ट कर दिया।

जहां शहरों के उथल-पुथल जीवन से बाहर आने के लिए लाखों पर्यटक उत्तराखंड आते हैं। वहीं आज उत्तराखंड वासी हर साल अपने पैतृक भूमि को छोड़ शहरों की ओर चले जाते हैं। पलायन आयोग के अनुसार 70% पलायन मैदानी भागों में ही हुआ है, वहीं 29% लोगों ने अन्य राज्य में पलायन किया है जबकि 1% लोगों ने विदेश में पलायन किया है और एक मुख्य बाद पलायन आयोग की रिपोर्ट में कहा भी गया है कि पहाड़ों में नेपाल व बिहार के लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है।

पलायन को रोकने के लिए राज्य सरकार को स्थानीय समस्याओं को ध्यान में रखकर पीने के पानी, स्वास्थ्य सुविधाओं जैसी मूल भूत आवश्यकता पर ध्यान देना चाहिए। पर्यटन को बढ़ावा देने की जरूरत है, धार्मिक स्थल के यातायात साधनों पर ध्यान देना चाहिए और नई फसलों के उत्पादन के लिए किसानों को जागरूक करना चाहिए।

इसके साथ ही हम सबको उन प्राचीन कारीगरों को फिर से पुनर्जीवित करना चाहिए और कारीगरों को उचित पारिश्रमिक देना भी सुनिश्चित करना चाहिए। उनकी वस्तुओं का उपयोग अधिक से अधिक करने के लिए जागरूकता अभियान चलाना चाहिए जिससे कि कारीगरों की कला को दुनिया के समक्ष उजागर किया जा सके। ऐसा करने से गांव का पलायन रोकने में सहायता मिल सकती है और इसी के साथ उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था भी सुधरेगी।

कवि महेश चंद्र पुनेठा अपनी कविता के माध्यम से पलायन की पीड़ा को बताते हुए लिखते हैं -

"सड़क तुम अब आई हो गांव,
जब सारा गांव शहर जा चुका है।"

वेदों में पर्यावरण

शिवानी, एम ए प्रथम वर्ष

वेदों में जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि, वनस्पति, अंतरिक्ष, आकाश आदि के प्रति असीम श्रद्धा प्रकट करने पर अत्यधिक बल दिया गया है। तत्वदर्शी ऋषियों के निर्देशों के अनुसार जीवन व्यतीत करने पर पर्यावरण असंतुलन की समस्या उत्पन्न नहीं हो सकती। इनमें हुए अवांछनीय परिवर्तनों के कारण आज जल - प्रदूषण, वायु - प्रदूषण, मृदा - प्रदूषण की समस्याएं चारों ओर व्याप्त है। जल जीवन का प्रमुख तत्व है, इसलिए वेदों में अनेक संदर्भ में उसके महत्व पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक वेदों में अलग-अलग प्राकृतिक संसाधनों का वर्णन अलग-अलग वेदों में किया गया है।

ऋग्वेद में पर्यावरण का वैशिष्ट्य बताते हुए लिखा है "अप्सु अन्तः अमृतं, अप्सु भेषजम्" अर्थात जल में अमृत है, जल में औषधि गुण विद्यमान रहते हैं। अस्तु, आवश्यकता है जल की शुद्धता - स्वच्छता को बनाए रखने की। निस्संदेह, जल संतुलन से ही भूमि में अपेक्षित सरसता रहती है, पृथ्वी पर हरीतिमा छाई रहती है, वातावरण में स्वाभाविक उत्साह दिखाई पड़ता है एवं समस्त प्राणियों का जीवन सुखमय तथा आनंदमय बना रहता है। इस प्रकार जल का कार्य पर्यावरण संतुलित करने में अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है।

यजुर्वेद में कहा गया है, "मित्रस्याहम् भक्षुसा सर्वाणि भूतानि समीक्षे" अर्थात सभी प्राणियों के प्रति सहृदयता का परिचय देना ही जीवन का सही लक्षण है। आज जिसे पारिस्थितिकी तंत्र कहते हैं उसमें भी तो रचना तथा कार्य की दृष्टि से विभिन्न जीवों और वातावरण की मिली-जुली इकाई का ही स्वरूप विश्लेषण किया जाता है।

अतः इस प्रकार इन दोनों वेदों में प्रकृति के विषय में पर्यावरण के संतुलित होने के संबंध में दोनों वेदों ने अपने - अपने विचार प्रस्तुत किए।

पर्यावरण को स्वच्छ सुंदर रखने का आग्रह है सिर्फ भावनात्मक स्तर पर किया गया हो, ऐसी बात नहीं है। वैज्ञानिक अनुसंधान के संदर्भ में भी सांविक्ता की भावना से अनुप्राणित होकर गहरे मानवीय संबंध की स्थापना पर पर्याप्त बल दिया गया है। उदाहरणार्थ, ऋग्वेद में वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में भी सूर्य को पिता, पृथ्वी को माता और किरण समूह को बंधु के समान आदर देने का स्पष्ट निर्देश है। आज तो गलत प्रतिस्पर्धा के कारण विश्व पर्यावरण विषाक्त बनता जा रहा है।

वेद का स्पष्ट निर्देश है कि लोग प्रकृति के प्रति श्रद्धा पूर्ण श्रद्धा रखें और पर्यावरण को शुद्ध बनाने बनाए रखने में अपना योगदान अवश्य देते रहें। आनंदमय जीवन व्यतीत करने के निमित्त उससे पर्यावरण की अनुकूलता प्राप्त करते रहें। इस विषय में ऋग्वेद के ऋषि ने अपना अशीर्वादात्मक उद्गार दिया है। वे कहते हैं -

"पृथ्वीः पूः च भव।"

अर्थात् समग्र पृथ्वी, संपूर्ण परिवेश परिशुद्ध रहे, नदी, पर्वत, वन, उपवन ये सब स्वस्थ रहें। गांव, नगर सबको विस्तृत और उत्तम परिचय प्राप्त हो, तभी जीवन का सम्यक विकास हो सकेगा।

वेदों में पर्यावरण - संतुलन का महत्व अनेक प्रसंगों में व्यंजित है। महावेदश महर्षि यास्क ने अग्नि को पृथ्वी - स्थानीय, वायु को अंतरिक्ष स्थानीय एवं सूर्य को द्युस्थानीय देवता के रूप में महत्वता देकर संपूर्ण पर्यावरण को स्वच्छ विस्तृत तथा संतुलित रखने का भाव व्यक्त किया है।

शुक्ल - यजुर्वेद का शाश्वत संदेश है, मधुयुक्त सरस - शुद्ध पवन गतिशील रहे, सागर मधुपूर्ण वर्षण करें, रात के साथ - साथ दिन भी मधुर रहे, पृथ्वी की धूल से लेकर अंतरिक्ष तक मधु संयुक्त हो। सूर्य मधुमय रहे, गाय मधुर देने वाली हो। निखिल ब्रह्मांड मधुमय रहे। (शुक्ल यजुर्वेद 13.2729)

हमारे वैदिक ऋषि मनीषी पर्यावरण रक्षण के प्रति बहुत जागरुक एवं सावधान रहे हैं। पर्यावरण रक्षण का अभिप्राय ही स्वयं की रक्षा करना है। अतः स्वकीय रक्षा हेतु यह पर्यावरण रक्षणीय है, इसी दृष्टि से उन्होंने प्रकृति की देवतभाव से उपासना की। अतः इस प्रकार वेद - निरूपित पर्यावरण - संरक्षण, स्वस्थ एवं विकसित जीवन का अन्यतम निर्देशन है।

Word of the Month

अस्तित्ववाद)Existentialism) यह एक मनुष्य केंद्रित दर्शन है। जो व्यक्ति के अस्तित्व, आजादी और चुनाव को महत्व देता है। इस दार्शनिक विचारधारा के अनुसार मनुष्य का महत्व उसकी आत्मनिष्ठता में है। विज्ञान,तकनीक और बुद्धि वादी दार्शनिकों ने मनुष्य को एक वस्तु बना दिया है जबकि मनुष्य स्वतंत्र प्राणी है और स्वतंत्रता का अर्थ है बिना किसी बाहरी दबाव के चयन की स्वतंत्रता। सोरेन कीर्कगार्द, यास्पर्स, मार्टिन हाइडेगर, सार्त्र, कामू, काफ्का आदि अस्तित्ववादी दार्शनिक और चिंतक हैं। सार्त्र का कथन है -Existence comes before essence.यानी अस्तित्व सार से पहले है।

यह न्यूज लेटर पूरी तरह अव्यवसायिक है तथा इसका प्रकाशन मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद के सदस्यों द्वारा छात्र हित में किया गया है।

Date.
Page No.

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद

आज दिनांक २४ फरवरी २०२२ को महाविद्यालय के कक्ष सं० 04 में मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद के तत्वाधान में महाविद्यालय के प्राचार्य के संरक्षण में संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ० इंदिरा जुगरान द्वारा विषय 'आयुर्वेदानुसार औषधीय पादपों के गुणधर्म व प्रयोग' पर व्याख्यान दिया गया; जिसमें निम्न प्राध्यापक/छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

क्र० सं०	प्राध्यापक/छात्र-छात्रा	पदनाम-विषय/कक्षा	फोन नं०	हस्ताक्षर
1	Salone	BA. Ist year	7248631325	Saloni
2	AKRITI	B.A. " "	8267855283	Akriti
3	Monika Khatri	B.A. " "	—	monika
4	Manika	B.A. II year	8126057584	Manika
5	Priyanshu Sing Sajwan	B.A. II Year	8697109517	Priyanshu
6	Shivanshi Uniyal	B.A II Year	7668228617	Shivanshi
7	डॉ० इन्दिरा जुगरान		9412175418	[signature]
8	Shraddha singh		7500909897	Shra
9	Dr. MINAKSHI SHARMA		9568616188	Minakshi
10	Vaibhav Singh Rawat		8077820062	Vaibhav
11	Dr Pooja Bhandari	Assistant Prof	9458558376	Pooja
12	DR Harsh Singh	Assistant professor	9410767263	[signature]
13	DR. Nishant Bhatt	Asst. Prof (English)	7668858862	NB
14	Sobam Singh	Asst. Prof. (Statistics)	9927699851	[signature]
15	SachIN Joshi	B.A Ist year	9760260814	[signature]

8525

Date. ____________
Page No. ____________

(16)	Abhishek Panwar	B.A I Year	7466959826	[signature]
(17)	Hrishabh Jardhari	M.Sc. III^rd Sem	9634589557	[signature]
(18)	Nidhi Rawat	M.Sc III^rd sem	7895327111	Nidhi
(19)	Shivani Rana	M.sc III sem	9557615512	Shivani
(20)	Mohit Joshi	M.sc III sem	9639872464	Mohit
(21)	Babita Chauhan	B.A 1st year	7830395463	Babita Chauhan
(22)	Anita	B.A. Ist year	7906560496	Anita
(23)	Simranrawat	B.A Ist year	8869836788	[signature]
(24)	Soniya	B.A II year	8439071514	Soniya
(25)	Shubham Pal	B.A I year	7617521105	[signature]
(26)	Saurabh Panwar	B.A I year	9568331681	Saurabh
(27)	Vishal	B.A I Year	7895724075	Vishal
(28)	megha Bhatt	B.A I year	9058333132	megha
(29)	Varsha	B.A I Year	9719450841	Varsha
(30)	Kajal	B.A I Year	9761577157	Kajal
(31)	Isha	M Sc I Sem Botany	7409158987	Isha
32	Chandni Pundir	M.Sc I^st sem "	8791193311	[signature]
33	Preeti	M.sc I^st sem "	7078209381	Preeti
34	Yashoda Negi	M.sc I^st sem "	7253089506	Yashoda
35-	Naveen Singh Negi	M.Sc I^st Sem "	740109845	[signature]
36.	Naveen shah	M.Sc. I^st sem.	9719938803	Naveen
(37)	Anjali Amola	M.Sc. III^rd Sem	8126732148	Anjali
(38)	Ambika Dabola	M.sc Botany III^rd sem	8006698894	Ambika
(39)	Neeraj jethi	M.sc Botany III^rd sem	8171736576	Neeraj
(40)	Meenakshi	M.sc Botany III^rd sem	9410784368	Meenakshi
(41)	Sakshi Shukla		8960725626	Sak
(42)	Madhuri Kohli		7838624844	[signature]
(43)	ARVIND SINGH RAWAT		7302022970	[signature]
44.	Dr. Ankita Bora	Assistant Pro	9997539627	[signature]
45.	Dr Meera Kumari	Assistant Prof	9456524539	Meera

UTTARAKHAND STATE COUNCIL FOR SCIENCE AND TECHNOLOGY (UCOST)
Department of Information, Science & Technology
Vigyan Dham, Post-Jhajra, Dehradun-248007, Uttarakhand
Website: http://www.ucost.in/home.html; Phone: 0135-2976266

UCS&T/PIC/IPR CELL/...1893/1 Date: 11/02/2021

To,

The Principal
Govt PG College, New Tehri
Tehri Garhwal – 249001

Subject: Regarding financial support of Rs 20,000 /- for establishment & related activities of IPR Cell for FY 2020-21 at Govt PG College, New Tehri, Uttarakhand.

Dear Sir,

Please find enclosed herewith Sanction order of Rs. 20,000 /- which was online transferred to the given account (Account Name: **The Principal, Govt PG College, New Tehri) by Transaction ID: 215759432 dated 10/02/2021** for the above mentioned subject.

Kindly acknowledge the same within 07 days.

Thanks and regards,

Yours sincerely

(Dr Aparna Sharma)
Senior Scientific Officer

Encls: as above

Copy for Information and necessary action to:

1. Dr Kuldeep Singh, Organizing Secretary & Assistant Professor, Dept. of Physics Govt PG College, New Tehri, Tehri Garhwal – 249001.
2. Office Copy.

(Dr Aparna Sharma)
Senior Scientific Officer

Encls: as above

UTTARAKHAND STATE COUNCIL FOR SCIENCE AND TECHNOLOGY (UCOST)
Department of Information, Science & Technology
Vigyan Dham, Post-Jhajra, Dehradun-248007, Uttarakhand
Website: http://www.ucost.in/home.html; Phone: 0135-2102769

UCS&T/PIC/IPR CELL/..... Date: 01/02/2021

Subject: Financial support for carrying out the activity of IPR Cell at Govt PG College, New Tehri during F.Y. 2020-21.

Sanction of Rs. 20,000/- (Twenty Thousand Only) in favor of "**The Principal, Govt PG College, New Tehri**" is hereby accorded with a release of Rs. 20,000/- (Twenty Thousand Only) towards grant-in-aid for carrying out IPR activities at the College through IPR Cell during F.Y. 2020-21.

Above grant is subject to the following conditions:

1. Proceedings and annual Progress report would be sent to the council by the IPR cell coordinator through Head of the Institutions.
2. The institute would highlight the Financial Support and role of UCOST Dehradun by giving due acknowledgment at all the forums, publications, pamphlets, banners and proceedings.
3. The grant shall be exclusively utilized for the purpose for which it is sanctioned. The money would not be diverted for any other purpose under any circumstance; even for temporary periods.
4. Assets acquired wholly or partially through grant shall not be disposed-off without obtaining prior approval of UCOST
5. The accounts will be audited according to the procedure of the host institution. Audited Utilization Certificate (UC) and Statement of Expenditure (SoE) duly signed by competent authority would be submitted to UCOST after completion of event/financial Year. In case of Private Institutions /Universities, Audited documents must be mandatorily counter signed by Charted Accountant (CA).
6. Unspent balance, if any, from the sanctioned grant would be returned to UCOST through bank draft in favor of "The Director General, UCOST" payable at Dehradun as earliest as possible.
7. Information about IPR applications received by the IPR cell shall be immediately submitted to UCOST.
8. About its forthcoming IPR awareness programmes, one month advance intimation would be sent and IPR experts from UCOST would be invited as guest/invited speakers.
9. The account of the programme shall be open to inspection by sanctioning authority/audit whenever the institution is called upon to do so.

This order is issued as per approval of the Director General, UCOST

(Dr D. P Uniyal)
Joint Director

Copy for Information and necessary action to:

1. The Principal, Govt PG College, New Tehri, Tehri Garhwal – 249001.
2. Dr Kuldeep Singh, Organizing Secretary & Assistant Professor, Dept. of Physics Govt PG College, New Tehri, Tehri Garhwal – 249001.
3. Accounts Section for release of above amount, under UCOST PIC Head (IPR Cell)
4. Office Copy.

(Dr Aparna Sharma)
Senior Scientific Officer

बौद्धिक सम्पदा अधिकार (IPR)प्रकोष्ठ
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल

महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों को सूचित किया जाता है कि **दिनाँक 05/03/2021** को **बौद्धिक सम्पदा अधिकार (IPR)प्रकोष्ठ** राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल द्वारा यूकॉस्ट, देहरादून के सहयोग से "**बौद्धिक सम्पदा अधिकारों**" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता यूकॉस्ट, देहरादून के डॉ० हिमांशु होंगे। अतः सभी प्राध्यापक निर्धारित तिथि एवं समय पर कार्यशाला में प्रतिभाग करना सुनिश्चित करें।

कार्यशाला का समय : **शायं 3.00PM-4:00PM**

स्थान : **कक्ष संख्या – 04**

04/03/2021
Principal

Department of Physics
Govt. P.G. College New Tehri
Tehri Garhwal (Uttarakhand)-249001

Ref. No. प्रेषि / IPR/GPGCNTT-2022 Date: 15/07/2022

To,

Director General
Uttarakhand State Council for Science & Technology(UCOST)
Vigyan Dham Jhajra, Dehradun-248007, INDIA

Subject: Submission of Report, Utilization Certificate & Statement of Account

Dear Sir,

Firstly I thank you for establishing IPR cell in our college and sanctioning Rs. 20000/- for the IPR activities for this year 2021-22. After the establishment of IPR cell in our college this year organized one day workshop on IPR in the month of March-2022. Now I am submitting the detail report, UC and SA for your kind perusal and necessary action in this regard.

Kindly acknowledge the receipt.

Regards.

Sincerely Yours
15/7/2022
(Dr. Kuldeep Singh)
Associate Professor
Coordinator IPR Cell
Govt. P.G.College New Tehri
Tehri Garhwal-249001